Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 011 Issue 08 AUGUST 2025 Pages 20 A.S. Rs 100

Bhajan Sandhya, P.P. Nirmalswamiji's Pragatya Din and Rakshabandhan celebration at Megarugas Hall-Chandivali

सत्संग समाचार

Special Dhun at "Akshardham" Temple, Powai

❊ पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य को सफलतापूर्वक आगे बढाने शनिवार, दि. २ से ४ अगस्त दौरान 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में करीब १५ घंटे की विशिष्ट धुन का आयोजन किया था, जिसमें स्थानिक तथा Online के माध्यम से कई हरिभक्तोंने भाग लिया। उसी प्रकार ऑस्ट्रेलिया मंडल के हरिभक्तोंने श्रावण मास और पवई मंदिर निमित्त समूह महापूजा करके अपनी भक्ति अदा की।

Samuh Mahapooja at Sydney, Australia

❊ गुरुवार, दि. ७ अगस्त को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में भजन संध्या, प.पू. निर्मलस्वामीजी का प्रागट्यदिन और रक्षाबंधन पर्व Megarugas Hall – चांदिवली में भक्तिभाव से मनाया गया।

Bhajan Sandhya at Megarugas Hall-Chandivali

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज बहुत बडा दिन इसलिये है कि हम निर्मलस्वामीजी का प्रागट्यदिन यहाँ मना रहे है। आज प्रार्थना करने का और आशीर्वाद लेने का दिन है। एक ही रीति से, एक सरिखा भक्तिभाव से साधुता से जीवन जीना, सेवक का सेवक बनकर रहना वो उनकी विशिष्टता है। खाना बनाने की सेवा, परोसने की सेवा वह इस उम्र में भी भाव से करते है। छोटे-बडे सभीके साथ उनका बर्ताव एक समान ही होता है। योगीजी महाराज की अंतर की प्रसन्नता उन्होंने प्राप्त की है। काफी समय तक वे गोंडल मंदिर के कोठारी भी थे। कठिन

Rakshabandhan celebration at Megarugas Hall-Chandivali

से कठिन परिस्थिति में भी साधुता से जीवन जीया। ऐसे संत के संबंध में रहने से जाग्रतता आती है। गुरुहरि काकाजी हमेशा बोलते थे कि दूसरों के लिये जीवन जीओं, खुद के लिये तो हम जी ही रहे है। हमें सामनेवाले को समझके सहायरुप होना चाहिए, वैसे हररोज हमें एक सत्कर्म करना चाहिए।

हम आज रक्षाबंधन का पर्व भी मना रहे है। उत्पत्ति-पोषण-प्रलय ये तीन क्रम नित्य चलते रहते है। भगवान ऐसे इन सबमें हमारी रक्षा करते ही है। सच्ची रक्षा यानि प्रत्यक्ष की निष्ठा। भगवान हमारे साथ ही है फिर भी हम रोते रहते है। भगवान कभी अपने भक्त की उपेक्षा नहीं करते। तो हम हमेशा प्राप्ति के केफ में आनंद करें वही प्रार्थना।

प.पू. निर्मलस्वामीजी ने आशीष देते हुए कहा कि जिसके पास भगवान है और जिसमें साधुता का चारित्र्य सहज दिखता हो उसमें से शीलता की खुश्बु आती है। भगवान की चेतना हर जगह काम कर रही है, इसलिये यह अक्षरधाम की ही सभा हो रही है। हम जीवन में कितने भी आगे बढ जाये लेकिन हमारे जीवन में गुरु होना बहुत जरुरी है। हम बहुत भाग्यशाली है कि ऐसे गुणातीत गुरु की गोद में हम बैठे है। जिसने अपने इन्द्रियों को जीत लिया है वही भगवान का दास कहलाता है। हमें सभी में केवल गुण ही देखना है, किसीका बिलकुल भी अवगुण देखना नहीं है। हम जो भी भगवान को मानते है उसमें निष्ठा पक्की रखें। हमें नियमित भजन संध्या में आना ही है। जो भी महिने की ये भजन संध्या की सभा में आयेगा उसके संकल्प प्रभु जरुर पूरा करेंगे। ऐसे भाव से हम जरुर आये वही प्रार्थना।

P.P. Nirmalswamiji's Pragatya Din celebration at Megarugas Hall-Chandivali

पवई के सभी संतभाईयोंने प.पू. निर्मलस्वामीजी को हार पहनाया।

उसके बाद डॉ.प.भ. दीपकभाई परमारने Yoga में जो शिक्षकों को तैयार किये उन्हें संतबहनों की ओर से स्मृतिभेट अर्पण हुई।

Felicitation of Yoga Teachers

उसी दिन सुबह प.भ. परेशभाई परमार के घर प.पू. निर्मलस्वामीजी का प्रागट्यदिन भी मनाया गया।

✻ शुक्रवार, दि. ८ से दि. २४ सितंबर दौरान प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई, पू. माधुरीबहन और पू. कृपाबहनने Paris, London, Switzerland की धर्मयात्रा के लिये प्रस्थान किया।

P.P. Nirmalswamiji's Pragtya Din celebration at Pareshbhai's home

At Dahyalal Pankhania's home, London

At Harendrabhai's home, London

लंडन में प.भ. डाह्यालाल पांखनिया, प.भ. केतनभाई-प.भ. दिनाबहन के घर पधरामणी करके सत्संग किया।

उसके बाद पेरिस के लिये प्रस्थान किया। वहाँ प.भ. जस्मीनभाई-प.भ. अविनाबहन, प.भ. युवराजभाई-प.भ. बबीताबहन, प.भ. मनुभाई-प.भ. इलाबहन, प.भ. भरतभाई-प.भ. धर्मिष्ठाबहन, प.भ. प्रवीणमासा, प.भ. प्रवीणदास-प.भ. इंदुमतीबहन, प.भ. राकेशभाई-प.भ. अंकिताबहन लाड के घर पधरामणी करके सत्संग किया। प.भ. जयभाई मिस्त्री की शादी में भी भाग लेकर उन्हें आशीष दिये। प.भ. प्रवीणभाई लाड की दुकान पर भी पधरामणी की। पेरिस में प्रख्यात Eiffel Tower की भी मुलाकात ली थी।

In Paris

At Jasminbhai's home

At Yuvrajbhai's home

With Manubhai and Ilaben

At Bharatbhai Mistry's home

At Pravinmausa's home

At Rakeshbhai Lad's home

At Jaybhai's Wedding ceremony

At Pravinbhai Lad's shop

At Eiffel Tower

In Geneva, Switzerland

At Bhartiben's home Bessal, switzerland

Switzerland में प.भ. भारतीबहन के घर पधरामणी की। वहाँ **Geneva** के **Rheinfall, Interlakan** भी पधारे और भरतभाई गुरुहरि काकाजी के साथ जहाँ गये थे उन प्रसादिक स्थानों के भी दर्शन किये। फिर वापस लंडन आ गये।

वहाँ दि. १५ से १७ अगस्त दौरान अनुपम मिशन में नये मंदिर का दशाब्दी महोत्सव और पू. हिंमतस्वामीजी का प्रागट्यदिन भक्तिभाव से मनाया गया। वहाँ संतभगवंत साहेबजी और अन्य संतभाईयों तथा हरिभक्तों को भी मिले।

उसके बाद गुणातीत ज्योत मंदिर भी गये थे और वहाँ सत्संग करके धुन-भजन किया।

At Anoopam Mission Temple, London

At Gunatit Jyot Temple, London

प.भ. अशोकभाई-प.भ. भावनाबहन, प.भ. प्रशांतभाई-प.भ. कलाबहन, प.भ. रीतेशभाई-प.भ. दिप्तीबहन, प.भ. जयेशभाई देसाई, **Leicester** में प.भ. शरदभाई-प.भ. कीर्तिबहन, प.भ. निलेशभाई, प.भ. वत्सलभाई, **Birmingham** में प.भ. कुनालभाई-प.भ. बीनाबहन कामदार के घर पधरामणी की। लंडन में प.भ. बलविंदर अटवालजी की बहन कुलवंतकोरजी को भी मिले। प.भ. राकेशभाई-प.भ. मिनाक्षीबहन, प.भ. अरविंदभाई-प.भ. कमुबहन, प.भ. हार्दिकभाई, पू. दिलीपभाई-पू. अरुणाबहन भोजानी, प.भ. अर्पितभाई रोय, प.भ. प्रफुल्लभाई पांखनिया, प.भ. केवलभाई-प.भ. जयश्रीबहन (किशोरभाई मास्टर्स की सुपुत्री), प.भ. नयनाबहन खीरोया, प.भ. भावनाबहन के घर सत्संग करके दि. २५ की सुबह वापस भारत पधारे।

पूरी यात्रा दौरान पू. किशोरभाई मास्टर्स भी उनके साथ रहे।

In London

At Ashokbhai's home, Leicester

At Kalaben's house, Leicester

At Riteshbhai's home

At Jayeshbhai Desai's home, Nottingham

At Nileshbhai's home

At Sharadbhai's home

At Vatsalbhai's home, Leicester

With Kunalbhai and Beenaben, Birmingham

At Kulwantkaur's home ,UK

At Rakeshbhai's home

At Arvindbhai's home, UK

At Hardikbhai's home, Watford-UK

At Dilipbhai Bhojani's home

At Arpit Rao's home, UK

At Prafulbhai Pankhania's home

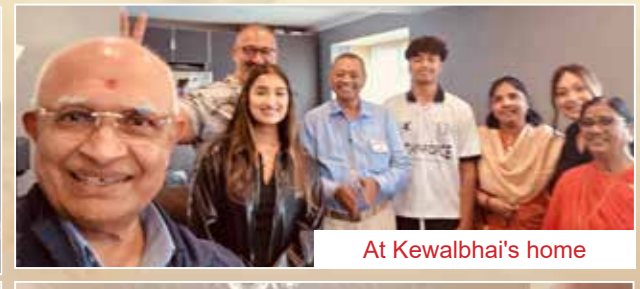

At Kewalbhai's home

At Nayanaben Khiroya's home

At Bhavanaben's home

❊ रविवार, दि. १० अगस्त को कांदिवली के शबरी अपमिन्ट के मंदिर में प.पू. निर्मलस्वामीजी का प्रागट्यदिन आनंदोत्सव के साथ मनाया गया। पवई से प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई और अन्य हरिभक्तोंने इस महोत्सव में भाग लिया था। सभा के पहले विशिष्ट शोभायात्रा का भी आयोजन हुआ था। इस सभा में कईं हरिभक्तों तथा वशीभाईने निर्मलस्वामीजी का माहात्म्यदर्शन कराया और अंत में निर्मलस्वामीजीने आशीष दिये थे। उसके बाद केक कटिंग करके सभीने आनंद किया।

P.P. Nirmalswamiji's Pragatya Din celebration at Kandivali

❊ बुधवार, दि. १३ अगस्त को कलगाम में कईं बच्चों को योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से स्कूल बेग दिये गये। पवई की ओर से प.भ. नयनभाई दिवेचा इस कार्य में सहभागी हुए।

School bag distribution at Kalgam by Yogi Divine Society

❊ रविवार, दि. १६ अगस्त को पवई मंदिर के नये **Project** हेतु युवकों के लिये तथा रविवार, दि. २४ अगस्त को भाभी तथा युवतीओं के लिये विशिष्ट सभा का आयोजन किया गया, जिसमें मुंबई-महाराष्ट्र के कईं

Project visit by Youths

स्थानों से हरिभक्तोंने भाग लेकर इस सेवा में समर्पितभाव से जुडने का संकल्प किया। प.पू. वशीभाईने सभीको जाग्रत होने तथा इस कार्य को सफलतापूर्वक आगे बढाने विशिष्ट आशीर्वाद देकर मार्गदर्शन दिया था।

Project visit by Yuvatis and Bhabhis

❊ शनिवार, दि. १६ अगस्त को 'जन्माष्टमी' का त्योहार सुबह विशिष्ट महापूजा के साथ 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर पवई में मनाया गया।

शाम को कार्यक्रम में छोटे बालकोंने विशिष्ट नृत्य प्रस्तुत कर आनंद किया। प.भ. मेघनाबहन चौरसिया के ग्रुप के प.भ. क्रिष्नाभाई और साथीओंने उद्धवजी का विशिष्ट प्रसंग नाट्य और नृत्य के रुप में दर्शाकर सभीको भक्ति रस में डूबा दिया।

Janmashtami celebration at "Akshardham" Temple, Powai

Janmashtami celebration at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. वशीभाई ने कहा कि जिंदगी में कुछ भी सरल नहीं होता। श्रीकृष्ण भगवानने हमें जीने की राह सीखाई है। भक्त और भगवान का प्रेम यानि राधा-कृष्ण। हम गुरुहरि काकाजी महाराज का प्रकाश है फिर उसमें मैं का अस्तित्वभाव रहता ही नहीं है। ब्रह्म होकर परब्रह्म की भक्ति करनी वही हमारा मुख्य सिद्धांत है। हर पल उत्सव के समान है। भगवान की शक्ति हर जगह काम करती है। तो खुद का सबकुछ छोडकर मैं ब्रह्मरुप हूँ ऐसे भाव में हम जीते हो जाये वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि हम हर साल आज का उत्सव आनंद के साथ मनाते है। गुरुहरि काकाजी महाराज श्रीकृष्ण के चरित्रों को बहुत दिव्य कहते थे। उनके जन्म के पहले से ही उनका वर्णन शास्त्रों में बताया गया था। १० अवतारों में से आठवाँ अवतार श्रीकृष्ण भगवान का कहा जाता है। उनकी प्रागट्यतिथि भी आठ और देवकी-वसुदेव के ८वे संतान थे। स्वामिनारायण भगवानने भी उनका

Janmashtami celebration at "Akshardham" Temple, Powai

महिमागान किया है। शिक्षापत्री में भी प्रथम श्लोक में श्रीकृष्ण को याद किया गया है। जो भी शास्त्र बने है वो मंगलाचरण से होते है, वैसे शिक्षापत्री में आरंभ, मध्य और अंत तीनों श्रीकृष्ण भगवान के श्लोक से हुआ है। तो जैसे अर्जुनने श्रीकृष्ण को राजी किया था, वैसे हमें अर्जुन के जैसे बनना है। तो हम हरपल आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

अंत में आरती के बाद बच्चोंने दहींहंडी के कार्यक्रम के साथ आनंदोत्सव मनाया।

❊ शनिवार, दि. २३ अगस्त को प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजीऔर संतों, प.पू. दिनकरभाई, पू. अश्विनभाई और संतबहनों तथा हरिभक्तों की उपस्थिति में हरिधाम संचालित Randolph - New Jersey (USA) मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में सुबह विशिष्ट महापूजा हुई और शाम को शोभायात्रा भी हुई।

Haridham Temple Murtipratishtha at Randolph-New Jersey (USA)

रविवार, दि. २४ को मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा विधि भक्तिभाव से संपन्न हुई।

अंत में प्रेमस्वरुपस्वामीजी और दिनकरभाई के विशिष्ट आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए। कईं हरिभक्तों इस महोत्सव में भक्तिभाव से शामिल होकर इस अवसर की शोभा बढाई।

❊ बुधवार, दि. २७ अगस्त को गणेशचतुर्थी निमित्त विशिष्ट महापूजा 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर पवई में हुई।

Ganpati celebration at "Akshardham" Temple, Powai

With Shri. Dilip Landeji

इस उपलक्ष्य में माननीय आमदार श्री. दिलीप लान्डेजीने पवई के श्यामप्रसाद मुर्खजी उद्यान में हिरानंदानी के महाराजा की उपमा से गणपतीजी का स्थापन किया था, उसमें पवई मंदिर से प.पू. वशीभाई और युवकों को आमंत्रित किया था।

उसी दिन प.पू. राजुभाई, अन्य संतबहनोंने मुंबई के कईं हरिभक्तों के घर गणपती दर्शन निमित्त पधरामणी की और सत्संग भी किया।

साथ ही उत्तर भारतीय मोर्चा घाटकोपर (पश्चिम) के BJP के प्रमुख श्री. मनोज सींगने एकता मित्र मंडल के गणेशोत्सव की सत्यनारायण की महापूजा में प.पू. वशीभाई को खास आमंत्रित किया था। उसी दौरान घाटकोपर (पश्चिम) के आमदार श्री. रामकदम को मिलकर अपना आनंद व्यक्त किया।

With Shri. Manoj Singh

At Pramodbhai Hendre's home

❊ जापान से Mr. Azuma and Mrs. Aoi 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में प.भ. ओमकारभाई पटने के साथ दर्शन करने पधारे थे। योगानुयोग उसी दिन Azuma का जन्मदिन था, तो वशीभाईने उन्हें विशिष्ट भेट के रुप में श्रीजी महाराज के चरणारविंद दिये। मंदिर के दिव्य वातावरण से उन्हें शांति और प्रसन्नता हुई।

With Mr. Azuma and Mrs. Aoi from Japan

❊ शनिवार, दि. ३० अगस्त को प्रसिद्ध गुजराती लेखक श्री.सौरभभाई शाह 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे और प.पू. भरतभाईने उनका अभिवादन किया।

With Famous Gujarati Writter and Author Shri. Saurabh Shah

❊ रविवार, दि. ३१ अगस्त को गुरुहरि पप्पाजी महाराज के प्रागट्यदिन निमित्त प.पू. माधुरीबहन और पू. जयश्रीबहन गुणातीती ज्योत, विद्यानगर पधारे थे।

पवई की ओर से संतबहनोंने पप्पाजी की मूर्ति को विशिष्ट हार पहनाया।

Guruhari Pappaji's 109th Pragatya Din celebration at Gunatit Jyot-Vidhyanagar

❊ उसी दिन जनकल्याण बँक के चेरमेन श्री. संतोष केलकरजी को लेकर श्री. संजय पांडेजी अक्षरधाम स्वामिनारायण मंदिर, पवई आये थे। साथ ही पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य हेतु कम समय में इतनी अच्छी प्रगति देखकर बहुत प्रभावित हुए थे।

With Jankalyan Bank Chairman Shri. Santosh Kelkarji

❊ ❊ ❊

અક્ષરધામ ગમન

❊ ગુણાતીત જ્યોત સાથે વર્ષોથી અત્યંત આત્મીયતાથી જોડાયેલાં અને કાંદિવલી મંડળનાં નિષ્ઠાવાન સત્સંગી તેમ જ પવઈ મંદિરના વરિષ્ઠ સંત પ.પૂ. ભરતભાઈનાં માતુશ્રી પૂ. હીરાબા પોપટલાલ મહેતા (ઉંમર–૯૩) લાંબી બીમારી ભોગવી સુખે સુખે ગુરૂવાર, તા. ૧૪ ઑગસ્ટના રોજ વિદ્યાનગર મુકામે અક્ષરનિવાસી થયાં.

બોરીવલીના પ.ભ. રમણિકઅદા અને પ.ભ. વિમળાબહેન મોદીના સંપર્કથી હીરાબા સત્સંગથી જોડાયાં. મુંબઈમાં પ.પૂ. જસુબાના જોગમાં આવતાં તેમને ગુરૂ સ્વરૂપે સ્વીકારી લીધાં હતાં. બોરીવલીમાં વિમળાબાનું ઘર તો સત્સંગનું કેન્દ્ર હતું, તેથી ત્યાં અનેક પ્રકારની સેવાઓ આવતી. તે બધામાં વિમળાબહેનને હીરાબાનો સારો સહકાર મળ્યો. બજારમાંથી શાકભાજી લાવવાથી માંડીને ઘરનાં બધાં વાસણો કે કપડાં ધોવા સુધીની સેવા પણ હીરાબાએ ખૂબ જ ચોકસાઈ અને મહિમાથી કરી હતી, તેથી વિમળાબહેનને તેમના પર ખૂબ જ ભરોસો હતો. વળી તે જમાનામાં આજના જેવી વાહનવ્યવહારની સગવડ નહતી અને હીરાબાની પણ આર્થિક પરિસ્થિતિ સારી નહતી તેથી ઘણી વખત તો કાંદીવલી પોતાના જ ઘરેથી બધા સામાન સાથે બોરીવલી વિમળાબહેનના ઘર સુધી ચાલીને જતાં અને ત્યાં જઈને પણ સીધાં સેવામાં જોડાઈ જતાં. તેમણે ક્યારેય પણ તેનો દેખાવ કર્યો નહીં કે કોઈ હકદાવો કર્યો નહીં કે વિશિષ્ટ સગવડ પણ માંગી નહીં. સેવાનું માહાત્મ્ય સમજીને પોતે ગરજ રાખી અહોહોભાવે સેવા કરી તો જશુબહેન અને ગુરૂહરિ પપ્પાજીનો રાજીપો મળી ગયો. વળી એક જ પુત્ર પ.પૂ. ભરતભાઈ તારદેવ મંદિરે ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ સાથે જોડાયા અને તેમણે સાધનામાર્ગ સ્વીકાર્યો તેમાં પણ હીરાબા અને પોપટભાઈએ ખૂબ જ શાંતિથી તેમને રજા આપી અને તેમનો માર્ગ સુગમ કરી દીધો.

હીરાબા સ્વભાવે ખૂબ શાંત અને મૃદુલ હતાં અને સેવામાં ખૂબ જ ચોકસાઈ અને ચીવટાઈ રાખતાં. તેમનો સ્વભાવ કરકસરયુક્ત હોવાથી મંદિરને નુકસાન ન થાય ને કેવી રીતે ફાયદો થાય એ પ્રમાણે જ સેવા કરતાં. એમનાં એ ગુણોનો અદ્‌ભુત વારસો એમનાં સંતાનોમાં પણ ખૂબ જ સરસ રીતે સચવાયેલો આપણે જોઈ રહ્યા છીએ. ભરતભાઈ તારદેવ આવી ગયા પછી સમય જતાં હીરાબા, પોપટભાઈ અને તેમની બન્ને દીકરીઓને પપ્પાજીએ ઈ.સ. ૧૯૯૧માં વિદ્યાનગર બોલાવી લીધાં. વિદ્યાનગરમાં પણ હીરાબાએ સેવાયજ્ઞ અવિરતપણે ચાલુ રાખ્યો અને તેમના ભાગમાં જે કંઈપણ સેવા આવી તે તમામ મોટાપુરૂષ કેમ રાજી થાય એ જ આશયથી

કોઈપણ પ્રકારના બાહ્ય દેખાવ કે હકદાવા વગર કરી તો સર્વે વડીલ બહેનો અને પપ્પાજીનો વિશિષ્ટ રાજીપો મેળવી લીધો. તેમની બન્ને દીકરીઓ પૂ. કલ્પનાબહેન અને પૂ. ભાવનાબહેને પણ એ જ વારસો ચાલુ રાખી સાધનામાર્ગે આગળ વધ્યા અને હાલ ગુણાતીત જ્યોતમાં વ્રતધારી સંતબહેનો તરીકે પોતપોતાના ક્ષેત્રમાં સુંદર સેવા કરી રહ્યાં છે. ઈ.સ. ૧૯૯૪માં પોષી પૂનમે તા. ૨૭ જાન્યુઆરીએ પોપટભાઈ મહેતા અક્ષરનિવાસી થયા. હીરાબા એક આદર્શ ગૃહસ્થ હતાં. તેમનું જીવન હંમેશાં સાધુતાભર્યું જ રહેતું.

Trayodashi Mahapooja of P. Heeraba

હીરાબાને ખૂબ ધન્યવાદ છે કે એમના દ્વારા ગુણાતીત સમાજ તથા પવઈ કેન્દ્રને કાકાજીના વારસદાર એવા ભરતભાઈની ભેટ મળી.

તેમના સ્વધામગમન વખતે ભરતભાઈ લંડન અને પેરિસની ધર્મયાત્રામાં હોવાથી તા. ૧૭ ઑગસ્ટે **'અક્ષરધામ' સ્વામિનારાયણ મંદિર, પવઈમાં** પ.પૂ. વશીભાઈએ હીરાબાની સ્મૃતિમાં વિશિષ્ટ પ્રાર્થનાસભાનું આયોજન કર્યું હતું, જેમાં સહુ હરિભક્તોએ ભાવપૂર્ણ શ્રદ્ધાંજલિ આપી હતી.

તા. ૨૯ ઑગસ્ટ વિદ્યાનગરમાં પપ્પાજી હૉલમાં તેમની ત્રયોદશી મહાપૂજા રાખવામાં આવી હતી, જેમાં પ.પૂ. ભરતભાઈ વિદેશની ધર્મયાત્રાથી પાછા આવી પવઈના સંતબહેનો સાથે ખાસ પધાર્યા હતા. ભરતભાઈએ હીરાબા સાથેની ઘણી સ્મૃતિઓ તાજી કરી હતી.

Prathana Sabha of P. Heeraba at Powai

હીરાબા તો અખંડ અક્ષરધામમાં હતાં અને રહેશે, પણ એમના જેવી નિષ્ઠા, સમર્પણ, મૂકસેવા મીતભાષીપણું, દરેક સંજોગો પ્રમાણે માહાત્મ્યસહિત સેવા કરવાની આવડત, સાધુતા વગેરે જેવા દિવ્ય ગુણો આપણને પણ બક્ષે તે જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજ, ગુરુહરિ પપ્પાજી મહારાજ તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને પ્રાર્થના.

❊ **पवई मंदिर से घनिष्ठ संबंध से जुडे हुए प.भ. श्यामभाई महेश्वरी (उम्र-८०) को Lungs Infection और Pneumonia से मुलुंड की Fortis Hospital में सारवार ले रहे थे। लेकिन उनकी तबियत ज्यादा बीगडने से दि. १६ अगस्त को वे अक्षरनिवासी हुए।**

वे बहुत ही प्रेमाल और स्नेही भक्त थे। प.पू. दिनकरभाई, प.पू. महेन्द्रबापु, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और संतभाईयों, संतबहनों तथा हरिभक्तों के साथ उनका अच्छा संबंध था। कईबार वे हरिभक्तों को अपने घर महापूजा तथा सत्संग के लिये बुलाते थे और सभीको आग्रह करके अच्छा भोजन कराते थे। हरिभक्तों के साथ मिलना उनको बहुत पसंद था। पवई मंदिर के कईं समैया-प्रसंगो में वे खास आते और यथाशक्ति अपना योगदान भाव से देते थे। उनकी धर्मपत्नी प.भ. शकुंतलाबहन को भी पवई की संतबहनें और हरिभक्तों के साथ अच्छा संबंध है। उनकी अंतिम क्रिया दि. १६ अगस्त को हुई, जिसमें पवई से वशीभाई और राजुभाई खास शामिल होने गये थे। उनकी त्रयोदशी की महापूजा में भी वे खास गये थे और भावपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पण की थी।

भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों को प्रार्थना करते है कि उनकी आत्मा को सदैव अपने पास रखें तथा उनकी धर्मपत्नी, उनका सुपुत्र प.भ. अशोकभाई-प.भ. शर्मिलाबहन, सुपुत्री प.भ. प्रीतिबहन-प.भ. दिलीपभाई को दुःखद प्रसंग में सहनशक्ति और बल प्रदान करें।

❊ ❊ ❊

❊ **પવઈ મંદિરની સાથે વર્ષોથી અત્યંત આત્મીયતાથી જોડાયેલા અને નિષ્ઠાવાન તેમ જ સમર્પિત સેવક પ.ભ. ભૂપેન્દ્રભાઈ જરીવાલા (ઉંમર-૭૫) ઘણા વખતથી બીમાર હતા અને ગુરૂવાર, તા. ૨૧ ઑગસ્ટના રોજ તેઓ સ્વધામ પધાર્યા.**

શરૂઆતથી જ તેઓ તથા તેમના મોટા ભાઈ પ.ભ. પ્રવિણભાઈ જરીવાલા મુંબઈમાં સી.પી. ટૅન્કમાં રહેતા હતા અને પ.ભ. બટુકભાઈ પરમાર સાથે ઘણો ઘનિષ્ઠ સંબંધ હોવાથી તેઓ પણ નિયમિત રીતે ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજનો લાભ લેવા તારદેવ મંદિરે પધારતા.

પૂ. રમેશભાઈ સોની સાથે તેમને ખૂબ પ્રીતિ હતી અને તેથી તેઓ અવારનવાર પ્રસંગોપાત સેવામાં પણ આવતા. પવઈમંદિરે પણ તેઓ અને તેમનાં ધર્મપત્ની પ.ભ. પૂર્ણિમાબહેન સેવા માટે આવતાં. ખાસ તો ભૂપેન્દ્રભાઈ ભૂપેન્દ્રભાઈ શાહ સાથે અને તેમના સ્વધામગમન પછી ઘણા વખત સુધી એકલે હાથે તેમણે પવઈ મંદિરનું વેચાણ કેન્દ્ર સંભાળ્યું હતું. પૂર્ણિમાબહેન પણ સક્રિય રીતે સેવામાં આવતાં. ભૂપેન્દ્રભાઈનો સ્વભાવ ખૂબ જ આનંદી હોવાથી કોઈપણ સેવામાં તેમને કંટાળો આવતો નહીં અને ગમે તેવી અગવડમાં પણ હસતા રહી સેવા કરતા તેથી પ.પૂ. મહેન્દ્રબાપુ, પ.પૂ. ભરતભાઈ, પ.પૂ. વશીભાઈ, પૂ. અરૂણભાઈ તથા સર્વેનો તેમના પર વિશિષ્ટ રાજીપો હતો. તેમનાં સંતાનો પ.ભ. કેકુલબહેન, પ.ભ. જરણાબહેન તથા પ.ભ. હર્ષિલભાઈ તથા પુત્રવધુ પ.ભ. હિનલબહેને પણ તેમને સરસ સહકાર આપ્યો અને સત્સંગનો વારસો જાળવ્યો.

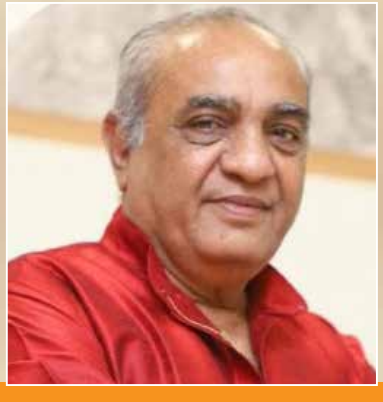

પ.પૂ. વશીભાઈ અને પૂ. રાજુભાઈ તેમની અંતિમ વિધિમાં ખાસ જઈ તેમને ભાવપૂર્ણ શ્રદ્ધાંજલિ આપી હતી. તા. ૧લી સપ્ટેમ્બરે પવઈ મંદિરે તેમના કુટુંબીજનો વતી ખાસ મહાપૂજા રાખવામાં આવી હતી અને સહુએ પ્રાર્થના કરી સત્સંગ કર્યો હતો.

Trayodashi Mahapooja of P.B. Bhupendrabhai

ભૂપેન્દ્રભાઈ તો અક્ષરધામમાં જ છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો તેમને અખંડ પોતાની પાસે રાખે અને તેમનાં કુટુંબીજનોને તેમની વિદાય સાલે નહીં અને ખૂબ બળ મળે તથા એમનો ગુણ વારસો સારી રીતે જાળવી રહે એવી જ પ્રાર્થના.

❋ ❋ ❋

❋ સાંકરદા કેન્દ્રના ખૂબ જ ભરોસાપાત્ર, સેવાભાવી, આત્મીય સંતપૂ. અક્ષરપ્રિયસ્વામીજી (ઉંમર–૬૩) ટૂંકી બીમારી ભોગવી મંગળવાર, તા. ૨૬ ઑગસ્ટના રોજ અક્ષરનિવાસી થયા.

અક્ષરપ્રિયસ્વામીજીના માતા–પિતા પ.ભ. હીરાભાઈ અને પ.ભ. શારદાબહેન ખૂબ જ નિષ્ઠાવાન અને બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજના વિશિષ્ટ આશીર્વાદ અને રાજીપો પ્રાપ્ત કરનાર હરિભક્ત હતાં. તેમના ત્રણ દીકરાઓનો જન્મ થયો ત્યારે પ્રસાદી રૂપે યોગીબાપાએ તે દીકરાઓને પોતાના ગળાની કંઠી પહેરાવી આશીર્વાદ આપ્યા હતા કે આ દીકરાઓ ભવિષ્યમાં અમારું કાર્ય કરશે. યોગીબાપાએ તેમના પરિવારને તારદેવ જવાની આજ્ઞા કરી. તારદેવ મંદિરે ગુરૂહરિ કાકાજી, ગરૂહરિ પપ્પાજી, સોનાબા સાથે તેમનો જોગ થઈ ગયો. તેમના કાંદિવલીના ઘરે સત્સંગનો અખાડો નિત્ય ચાલતો રહ્યો. પ.પૂ. મહેન્દ્રબાપુ, પ.પૂ. રમેશભાઈ સોની, પ.પૂ. ભરતભાઈ, પ.પૂ. વશીભાઈ અને સર્વ સંતભાઈઓ એમના ઘરે સભા થતી ત્યારે આવતા. હજી તો અક્ષરપ્રિયસ્વામીજી કિશોર અવસ્થામાં હતા ત્યારે જ પપ્પાજીએ મુંબઈનું મકાન વેચી તેમના પરિવારને ગુજરાત આવવા આજ્ઞા કરી. તેથી તેઓ વિદ્યાનગર આવ્યા એટલે પપ્પાજીએ બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજીની નિશ્રામાં રહેવા સાંકરદા જવા કહ્યું. આમ અક્ષરપ્રિયસ્વામીજી જીવન સંતોના સહવાસમાં જ શરૂ થઈ ગયું હતું.

ધીમે ધીમે સાધુતાનો રંગ સહજ જ ચઢતો ગયો. એટલે ભણવા જેવી તો બ્રહ્મવિદ્યા છે. તે અભ્યાસકાળ દરમ્યાન તેમને દૃઢ થઈ ગયું. ઈ.સ. ૧૯૮૧માં ભગવાન સ્વામિનારાયણની દ્વિશતાબ્દી હતી, ત્યારે ૧૫ ફેબ્રુઆરીના અક્ષરવિહારીસ્વામીજીના પ્રાગટ્યદિને ગુણાતીત સ્વરૂપોની હાજરીમાં સાત યુવાનોને દીક્ષા આપવામાં આવી હતી, તેમાં બીપિનભાઈ (અક્ષરપ્રિયસ્વામીજી)ને ભાગવતી દીક્ષા આપી સાધુ બનાવ્યા. તેમની

હોંશિયારી, કૂનેહ, વિધવિધ કલાઓથી અન્ય વિભાગોમાં સેવા કરવાની આવડતના લીધે અક્ષરવિહારીસ્વામીજીનો વિશિષ્ટ રાજીપો તેમને મળી ગયો. સાંકરદા મંદિરનું નાનું–મોટું કે બહારનું દરેક કાર્ય તેમના વગર થતું જ નહીં. તન–મનથી તેઓ જે સેવા કરતા તેના ફળસ્વરૂપે અક્ષરવિહારીસ્વામીજીને તથા અન્ય સંતોને નિશ્ચિંતતા રહેતી. અક્ષરપ્રિયસ્વામીજીને સહુ સાથે મળીને સુહૃદભાવથી કામ કરવાનું ગમતું. 'સૌનો સાથ, સૌનો વિકાસ' તે પ્રમાણે બધાંને સાથે રાખીને બધા જ કાર્યો કરતા. તેમના મૈત્રીભર્યા સ્વભાવના લીધે ઘણાંય ચૈતન્યોને તેમણે આધ્યાત્મિક માર્ગે આગળ વધાર્યા.

તેમણે તેમના જીવનમાં કોઈપણ જાતની અપેક્ષા રાખ્યા વગર હંમેશાં ગુણાતીત સ્વરૂપો તરફ જ નગર રાખી એકધારી સેવા છેલ્લા શ્વાસ સુધી કરી. માન, સન્માન, હાર–તોરા કે અન્ય કોઈ વાતથી પર રહીને સેવકભાવે જ જીવન જીવતા. 'સેવા પરમો ધર્મ...' આ સૂત્ર તેમના જીવનમાં તેમણે સારધાર સિદ્ધ કરી બતાવ્યું. સાત સામેલિયા સાધુ તરીકે પોતાના કાર્યથી પ્રકાશિત થઈ ગયા. જોતજોતામાં તેઓ અક્ષરવિહારીસ્વામીજી તથા ગુરૂજીના જમણા હાથ સમાન બની ગયા હતા. તેમનું સ્વાસ્થ્ય એટલું સારું હતું કે તેઓ ક્યારેય હૉસ્પિટલમાં દાખલ થાય એવી પરિસ્થિતિ આવી જ નહતી. નાનું–મોટું કંઈક દેહમાં આવતું તો કોઈને કંઈ જ ન કહેતા દેહભાવથી પર થઈને જીવન જીવતા. હાલ જ્યારે તેઓ બીમાર પડ્યા ત્યારે તકલીફ સહન ન થતા તેમને હૉસ્પિટલમાં દાખલ થવું પડ્યું. પણ તેઓ સતત એ જ પ્રાર્થના કરતા કે મારે કોઈનીય સેવા ક્યારેય લેવી ન પડે. તેથી અલ્પ સમયમાં જ મહારાજને તેમને પોતાની પાસે બોલાવી લીધા.

તેમની અંત્યેષ્ટિ વિધિ હરિધામ મંદિરે સહુ ગુણાતીત સમાજના સંતો, જ્યોતિર્ધરો, હરિભક્તોની હાજરીમાં થઈ. પરદેશ યાત્રાથી આવીને પ.પૂ. ભરતભાઈ સહુ સંતોને મળવા સાંકરદા ગયા હતા અને પવઈ મંદિર તરફથી સહુ સંતભાઈઓ વતી અક્ષરપ્રિયસ્વામીજી માટે પ્રાર્થના પણ કરી હતી. તેમની ત્રયોદશીની મહાપૂજા ભાદરવા વદ છઠ તા. ૧૨ સપ્ટેમ્બર, પપ્પાજીના તિથિ પ્રાગટ્યદિને સાંકરદામાં ગુણાતીત સમાજના સર્વે કેન્દ્રોના વડીલ સંતો, સંતભાઈઓ અને હરિભક્તોની ઉપસ્થિતિમાં પૂ. ઈલેશભાઈ અને સાથીઓએ ખૂબ જ ભાવપૂર્વક કરી હતી અને તેમને શ્રદ્ધાંજલિ અર્પી હતી.

અક્ષરપ્રિયસ્વામીજીએ તો પોતાનું જીવન ધન્ય બનાવ્યું અને પોતાના મળતાવડા સ્વભાવથી અનેકને સત્સંગ માર્ગે પ્રગતિ કરવા પ્રેરણા આપી. તેમના જેવા દિવ્ય ગુણો આપણામાં પણ આવે એ જ ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ, ગુરૂહરિ પપ્પાજી મહારાજ, બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજી, બ્ર.સ્વ. અક્ષરવિહારીસ્વામીજી તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોનાં ચરણે પ્રાર્થના.

At Sankarda

॥ स्वामिश्रीजी ॥

रक्षाबंधन

'अक्षरधाम', मंदिर
पवई, मुंबई

दि. 9 अगस्त, 2025

'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई से सभी संतबहनों के रक्षाबंधन के अवसर पर भावसभर जय श्री स्वामिनारायण...

आज रक्षाबंधन का पवित्र और मंगलकारी दिन है। सामान्यतः कोई भी व्यक्ति हरप्रकार के बंधन से मुक्त होने की इच्छा रखता है। परंतु, यही एक ऐसा दिन है कि रक्षारुपी कवच यानि कि रक्षा के बंधन में हर कोई बंधने के लिए तत्पर होता है, क्योंकि इस बंधन से हमारी हरप्रकार से रक्षा होती ही है। साथ ही, हम सर्वप्रकार की शांति, सुरक्षा और आनंद से भरा हुआ सुरक्षित जीवन जी सकते है।

हमारे शास्त्रों और पुराणों में भी रक्षाबंधन से संबंधित कई बातें है और तद्नुसार रक्षाबंधन के दिन बहनें भाईयों को, गुरु शिष्यों को रक्षारुपी राखी बांधते है और रक्षा का पर्व मनाते है। महाभारत का एक बहुत ही रोचक प्रसंग है कि माता कुंतीने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को महाभारत के युद्ध में जाने से पहले रक्षा बांधी थी। उस युद्ध में लडते हुए अभिमन्युने अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन किया था और जब तक वह रक्षारुपी कवच उसके साथ रहा तब तक उसकी रक्षा हुई। तो ऐसी सच्ची भावना से जो रक्षा बांधी जाए, तो चाहे कैसी भी विपरीत परिस्थितियाँ हो हमारी रक्षा होती ही है।

भगवान स्वामिनारायणने तो रक्षारुपी सुदर्शन चक्र यानि कि शिक्षापत्री घर-घर में दी है और जो कोई भी इस शिक्षापत्री में विदित नियमोंरुपी इस चक्र में रहेंगे तो वे हमेशा निर्भय और निश्चिंत रहेंगे, ऐसा आश्वासन भी दिया है। गुणातीतानंदस्वामीने भी इस बात का समर्थन किया है। (स्वा.बा.प्र. 13/12)

भगवानने ब्रह्मांड का सर्जन किया तो उसके पालन, पोषण और प्रलय की सुंदर व्यवस्था भी की है। उस व्यवस्था के अनुसार ब्रह्मा सर्जन करते है, विष्णु पालन-पोषण करते है और शिवजी संहार करते है। जब पालन-पोषण की बात आती है तो रक्षण भी उसके अंतर्गत ही आ जाता है। हम बहुत भाग्यशाली है कि गुणातीत पुरुषों द्वारा हमें भी हरप्रकार की रक्षा का कवच मिला ही है। इसलिये बाह्य रक्षा तो ठीक है, परंतु हमारे आंतरिक दोषों और अभाव-अवगुण-भावफेर जैसी विपत्तियों से भी ये पुरुष हमारी रक्षा करते है। अगर हम सही प्रकार से उन्होंने दिये हुए वचनों और नियमों का पालन करते है तो हमारे रक्षण और पोषण दोनों की जिम्मेदारी लेकर वे हमारा सर्वांगी हित करते है, यह बात निर्विवाद रुप से सत्य है।

तो आज के इस मंगलकारी दिन पर भगवान स्वामिनारायण, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों अखंड हमारी रक्षा में ही है ऐसा विश्वास और निश्चिंतता के साथ महापूजा में प्रासादिक की हुई ये रक्षारुपी राखी आपको प्रेम से भेज रहे है, इसका स्वीकार करना।

तो सभी सुखी रहो... स्वस्थ रहो... सुरक्षित रहो...

प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई तथा सभी संतभाईयों के आशीष और संतबहनों की शुभेच्छा के साथ...

लि. आपके ही सभी संतबहनों की ओर से...
माधुरी और जयश्री के जय श्री स्वामिनारायण.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) A Special Dhun for Powai Temple Project on 2nd August. (2) Australia Mandal did Special Mahapooja in Month of Shravan on 2nd August. (3) Bhajan Sandhya, P.P. Nirmalswamiji's Pragatya Din celebration and Rakshabandhan at Megarugas Hall-Chandivali on 7th August. (4) Pilgrimage Tour of P.P. Bharatbhai, P. Ashwinbhai, P. Madhuriben and P. Krupaben to Paris, Switzerland and London from 08th to 24th August. (5) P.P. Nirmalswamiji's Pragatya Din celebration at Kandivali on 10th August. (6) Bag distribution at Kalgam by Yogi Divine Society on 13th August. (7) Special Youth Gathering for Powai Temple Project at "Akshardham" Temple, Powai on 16th and 24th August. (8) Celebration of Janmashtami at "Akshardham" Temple, Powai on 16th August. (9) Murti Pratishtha vidhi at Randolph-New Jursey (USA) on 23rd and 24th August. (10) Celebration of Ganesh Chaturthi and Saint Brothers' visit to various places on 27th August. (11) Mr. Azuma and Mrs. Aoi from Japan visited "Akshardham" Temple on 27th August. (12) Famous Gujarati Writer and Author Shri. Saurabh Shahji came for Darshan at "Akshardham" Temple, Powai on 30th August. (13) Celebration of Guruhari Pappaji Maharaj's 109th Pragatya Din at Gunatit Jyot-Vidhyanagar on 31st August. (14) Chairman of Jankalyan Bank Shri. Santosh Kelkarji came for Darshan at "Akshardham" Temple, Powai on 31st August. (15) Blessings by P.P. Bharatbhai on the auspicious occasion of Rakshabandhan on 14th August. (16) Akshardhamgaman of P.B. Heeraba (P.P. Bharatbhai's Mother) on 14th August at Gunatit Jyot-Vidhyanagar. (17) Aksahrdhamgaman of P.B. Shyam Maheshvariji on 15th August. (18) Akshardhamgaman of P.B. Bhupendrabhai Jariwala on 21st August. (19) Akshardhamgaman of P. Aksharpriyaswamiji on 26th August.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta